B.A. Part-I Pear-IV

प्राकृत-भाषा का शिलालेखीय साहित्य

Ans - प्राकृत-भाषा का शिलालेखीय साहित्य संस्कृत-भाषा के शिलालेखों की अपेक्षा कई बातों में विशिष्ट है क्योंकि वे सबसे प्राचीन है आरम्भ से ईस्वी सन् की प्रथम शती तक के समस्त शिलालेख प्रायः प्राकृत में ही है। इन शिलालेखों में केवल व्यक्तियों के यशोगान का ही वर्णन नहीं बल्कि जीव हित की अनेक बातों पर भी प्रकाश डाला गया है। लिखित रूप से मध्ययुग का पुरातन जो भी साहित्य उपलब्ध है, वह शिलालेखी-प्राकृतों का ही है।

शिलालेखीय साहित्य के प्राचीनतम रूप

अशोक के शिलालेखों में सुरक्षित है। इन शिलालेखों की दो लिपियाँ है- ब्राह्मी और खरोष्ठी, खरोष्ठी लिपि में शाहबाजगढ़ी और मनसेरा के शिलालेख मिलते है, तथा अवशिष्ट शिलालेखों की लिपि ब्राह्मी है।

अशोक के 30 शिलालेख है:-

(1.) चतुर्दश धर्मलेख शाहबाजगढ़ी (पेशावर जिला) मंसेहरा (हजारा जिला), गिरनार

(जूनागढ़) सोपारा (थाना जिला), कालसी (देहरादून), धौली (पुरी जिला), जौगढ़ (गंजाम जिला) और इरागुडी (निजाम रियासत) स्थानों में प्राप्त।

(2) सात स्तम्भलेख — टोपरा (दिल्ली) मेरठ, कौशाम्बी (इलाहाबाद), रामपुरवा, लौरिया (अरराज), लौरिया (नन्दनगढ़) में उपलब्ध।

(3) भाब्रू-शिलालेख

(4) दो लघु शिलालेख — प्रथम- सिद्धपुर जटिंग रामेश्वर, ब्रह्मगिरि, रूपनाथ (जबलपुर), सहसराम (रोहतास), बैराट (जयपुर) मास्की, गवीमठ, पलकीगुण्ड और इरागुडी में पाया जाता है। द्वितीय- सिद्धपुर, जटिंग रामेश्वर और ~~ब्रह्मगिरि~~ ब्रह्मगिरि में पाया जाता है ये तीनों स्थान मैसूर के चीतल-दुर्ग में है।

(5) दो कलिंग अभिलेख — धौली और जौगढ़ में प्राप्त है।

(6) दो तराई अभिलेख — रूम्मिन देई और निग्लिव

(7) तीन लघु स्तम्भलेख — सांची, कौशाम्बी और सारनाथ में

(8) तीन गुहालेख — बराबर पहाड़ी में तीन अभिलेख है